© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 10 , Issue : 04 | October - December 2023

सर छोटूराम और उनके आर्थिक सुधार

डॉ. विकास कुमार,
असिस्टैंट प्रोफेसर, सी.आर.एम. जाट कॉलेज, हिसार

भारत कृषि प्रधान देश से विख्यात है। कृषि भारतीय समाज की रीढ़ की हड्डी के समान है। कृषक एवं मजदूर वर्ग को पहचान दिलाने तथा इसमें जागरूकता पैदा करने में दीनबन्धु सर छोटू राम का योगदान अविस्मरणीय रहेगा। ग्रामीण समाज के हितों के प्रवक्ता के रूप में उन्होंने इस समाज के लिए एक प्रारूप प्रदान किया। उन्होंने कृषक और कामगार वर्ग को सम्मान दिया तथा कमजोर वर्ग को साहूकारों के चंगुल और कर्जे से मुक्त कराया। समाज के कमजोर वर्ग पर किए जाने वाले प्रत्येक अन्याय के विरूद्ध इन्होंने अथक–योद्धा की भूमिका का निर्वाह किया। वे किसी से डरे नहीं अपितु सर्वप्रिय बनकर खेतीहर एवं मजदूर की हित प्राप्ति की लडाई में प्रथम प्रकाश स्तम्भ बनें।

अतीत वर्तमान का बादल बनकर हर बार नए युग का श्री गणेश करता है। हर युग में कोई न कोई ऐसा महापुरूष आया है जिसने हमारी प्राचीन संस्कृति को नया रूप दिया, नए प्रतिमान दिए तथा इतिहास को नया आयाम दिया है और तत्कालीन समाज में फैली हुई बुराईयों को समाप्त किया। किसानों, मजदूरों एवं देहातियों के सन्दर्भ में दीनबन्धु चौधरी छोटू राम पर यह बात सही तरीके से लागू होती है। 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध तथा बीसवीं सदी के पूर्वाद्ध में जब अविभाजित महा–पंजाब में, महाजनों और जमींदार–समान्तों के खूनी पंजे निर्धन एवं लाचार देहातियों, किसानों और श्रमिकों का शोषण कर रहे थे। मुस्लिम लीग जैसी विघटनकारी एवं साम्प्रदायिक शक्तियां समाज में जहर घोल रही थी और अंग्रेज भारत को आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक रूप से नष्ट करने पर तुले हुए थे तब सर छोटू राम के नाम से विख्यात राम रिछपाल का जन्म 24 नवम्बर सन् 1881 में जिला रोहतक के एक गांव गढी–सांपला में एक गरीब किसान चौधरी सुखीराम के घर हुआ।

सर छोटूराम के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक इत्यादि विचारों पर तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव था। सर छोटूराम (बचपन का नाम रिछपाल) का जन्म तथा बाल्य अवस्था में पालन–पोषण गांव में हुआ। उनके दादा के पास केवल 10 एकड़ भूमि थी। यह भूमि अनौपजाऊ, बारानी एवं शुष्क थी। उनका परिवार कर्ज एवं मुकदमें बाजी के बोझ में दबा हुआ था। तत्कालीन समस्त ग्रामीण समाज आर्थिक तंगी, सूदखोरों एवं साहूकारों द्वारा आर्थिक शोषण, ग्रामीण जीवन में सामाजिक एवं आर्थिक कठिनाइयां इत्यादि कारकों ने सर छोटूराम के चिन्तन को प्रभावित किया।

चौधरी छोटूराम एक महान व्यक्ति थे। कोई भी व्यक्ति जो महान् बना है। उसके जीवन में ऐसी घटना अवश्य घटित हुई है जो उसे महान् बनाने की ओर ले गई।

चौधरी छोटूराम आठवीं कक्षा पास करने के पश्चात् अपने पिता जी के साथ सांपला वाले सेठ घासीराम के पास आगे पढने के लिए कर्ज लेने गए थे। गर्मी के दिन थे जब वे लाला जी के नौरहे में पहुंचे तो उसने पंखे की मोटी रस्सी चौधरी सुखी राम की ओर फेंक दी और पंखा खींचने को कहा। उनके पिता बिना इन्कार किए खुद पसीने में भीगे पंखा हिलाने लग गए। इसे देखकर छोटूराम तिलमिला उठे और सेठ जी को कहा कि आपने न बैठने को कहा और न ही पानी पीने के लिए पूछा तथा यह

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 10 , Issue : 04 | October - December 2023

रस्सी मेरे पिता जी की ओर फैंक दी या तो पंखा खींचने के लिए मेरे से कहते या फिर आपके बेटे दयाराम से कहते।

किसान के छोरे का इतना दुस्साहस देखकर सेठ सहम गया और बोला चौधरी क्या काम आए हो ? छोटूराम के पिता जी ने कहा यह लडका आगे पढना चाहता है और इसने आठवीं पास कर ली है परन्तु मेरे पास आगे की पढ़ाई के लिए खर्चा नहीं है। सेठ ने उत्तर दिया कि जाट का लड़का आठवीं पास हो गया। यों कै कम सै। पटवारी – पतरौल लाग ज्यागा या पुलिस–फौज में भरती हो ज्यागा। आप और क्या चाहतो हो ? बालक छोटू ने सेठ जी के इन आव–भाव को देखकर वहीं सोच लिया था कि किसानों को मैनें ऋण–जाल से मुक्त कराना है।

सर छोटूराम 24 नवम्बर, 1881 से 9 जनवरी 1945 तक उत्तर भारत की राजनीति में भारत विभराजन से पूर्व एक सुप्रसिद्ध राजनेता, शिक्षाविद, वकील, प्रशासक, समाज सुधारक, किसानों, दलितों तथा श्रमिकों के मसीहा, हिन्दू–मुस्लिम–सिक्ख एकता के अग्रदूत, सर्वहारावर्ग के प्रेरणा स्त्रोत, धर्मनिरपेक्षता के समर्थक, भारत विभाजन के विरोधी, निर्भीक एवं ओजस्वी वक्ता, बेहतरीन संगठनकर्ता, लेखक, पत्रकार एवं सम्पादक थे। सर छोटूराम ईमानदारी, कर्मठ व्यक्तित्व एवं वैज्ञानिक चिन्तन के धनी थे।

चौधरी छोटूराम को अनुसूचित जातियों के द्वारा 'दीनबन्धु' के नाम से सम्मानपूर्वक सम्बोधित किया गया। चौधरी साहब ने अनेक बाधाओं के बावजूद भी मुलतान जिले (पाकिस्तान) में 132 अप्रैल 1938 को खाली पड़ी कृषि भूमि सरकारी 4 लाख 54 हजार 625 एकड को दलितों में तीन रूपये प्रति एकड़ बिना ब्याज के 12 वर्षों में चार आना (वर्तमान 25 पैसे) किश्त के आधार पर अलाट करके भू–स्वामी बना दिया। परिणामस्वरूप 13 अप्रैल (बैशाखी के दिन) मुलतान जिले के दलितों ने चौधरी छोटूराम को हाथी पर बैठाकर जुलूस निकाला। इस जन सैलाब में सार्वजनिक मंच से उनको 'दीनबन्धु' की उपाधि ने नवाजा गया। चौधरी छोटूराम भारत के इतिहास में एकमात्र ऐसे नेता है जो मुसलमानों के रहबरे–आजम तथा दलित वर्गों के लिए दीनबन्धु थे। उनको यहां सम्मानजनक उपाधियां किसी विश्वविद्यालय के द्वारा नहीं अपितु जनता के द्वारा उनको नवाजी गई। रहबरे–आजम, दीनबन्धु चौधरी छोटूराम, हिन्दू–मुस्लिम–सिक्ख–दलित वर्ग के लोकप्रिय नेता तथा सभी किसान जातियों के वास्तव में 'मसीहा' थे। इस प्रकार ऐसे युग पुरूष विरले पैदा होते हैं। ऐसे महान नेताओं को किसी जाति विशेष से जोडना सर्वथा अनुचित, अपमानजनक एवं अन्यायपूर्ण होगा।

चौधरी छोटूराम को 'सर छोटूराम', 'रहबरे–आजम' तथा 'दीनबन्धु' की उपाधियां नवाजी गई। चौधरी छोटूराम, रहबरे–आजम तथा दीनबन्धु यूं ही नहीं पुकारे जाते अपितु ये दोनों उपाधियां उनकी विचारधारा, त्याग, युगदृष्टता, एवं उनके अनुकरणीय आदेशों एवं सिद्धान्तों के कारण जनता के द्वारा नवाजी गई। चौधरी छोटूराम की कथनी व करनी में कोई अन्तर नहीं था।

जादू वह जो सिर चढ़कर बोले। बस ऐसे ही चौधरी छोटूराम व्यक्तित्व के धनी थे जोकि अपने युग में विशेष रूप से पंजाब में और सामान्य रूप से उत्तरी भारत में प्रसिद्ध हुए। वह एक ऐसे महापुरूष हुए हैं जिनका सारा जीवन स्वनिर्मित था। एक साधारण निर्धन किसान के घर में उनका जन्म हुआ और बहुत कठिन परिस्थितियों एवं मुश्किल बाधाओं में ज्यों–त्यों करके उन्होंने शिक्षा प्राप्त की। विद्यार्थी काल में ही उन्हें साहूकारों एवं किसानों के साथ होने वाले व्यवहार का कटु अनुभव था। जिस प्रकार महात्मा बुद्ध को जीवन में एक मृतक शव के दर्शन से कल्याण–मार्ग का पथिक बना अथवा जिस प्रकार दयानन्त को शिव–मूर्ति पर चढ़े चूहे ने सच्चे ईश्वर तथा धर्म का अन्वेषक ऋषि एवं प्रचारक सन्यासी बना दिया। ठीक इसी प्रकार पिता के साथ साहूकारों द्वारा किए गए अपमानजनक बर्ताव की घटना ने झंकझोर दिया।

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 10 , Issue : 04 | October - December 2023

परिणाम यह हुआ कि साहूकारों के शोषण एवं नौकरशाही के दमन से ग्रामीण जनता को मुक्ति दिलाना, उन्हें अपना ध्येय निश्चित कर लिया। एक निराली राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक क्रान्ति के प्रवर्तक बनकर उन्होंने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए सर्वस्व की बाजी लगा दी।

प्रत्येक महापुरूष समय की उपज होता है। अतः चौधरी छोटूराम का राजनैतिक आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान के योगदान में उस समय परिस्थितियों की मांग थी। उस समय पंजाब प्रान्त में लगभग कृषि ही प्रान्तीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी थ। यह अर्थव्यवस्था एक तरफ किसान और मजदूर से सम्बन्धित थी, तो दूसरी तरफ इसका सीधा सम्बन्ध व्यापारी वर्ग से था। किसान और मजदूरी ग्रामीएण जनता से सम्बन्धित थे, जो व्यापारियों द्वारा ठगे और ठुकराए जाते थे। सिंचाई की सुविधाओं का अभाव था, अकालों की मार से देहाती लोग बहुत दुःखी थे। अधिकतर देहाती लोग ऋण के नीचे दबे हुए थे। ऋण के नीचे दबने के कारणों में बनिये का व्यवहार, काणी डण्डी कच्चे बाट, फसलों की कीमतें गिर जाना और जीवन स्तर का ऊपर उठाना तथा रिवाज को अति महत्वपूर्ण सामजिक दायित्व समझना, शैक्षणिक स्तर कम होना और पक्की सड़कों का अभाव इत्यादि अनेक बातें थी जिनसे कर्ज लेना ही पडता था।

जब किसान और देहाती ऋण लेने के चक्कर में फंस जाता था तो उससे निकलना बड़ा मुश्किल कठिन और असम्भव था। कानून और सरकार साहूकार की मदद करती थी। अतः हम कह सकते हैं कि उस समय के समाज में राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक दशा बड़ी दर्दनाक और भयावहपूर्ण थी। भारत के राजनीतिक इतिहास में चन्द लोग ही ऐसे मिलते हैं जो देश के भूखे, नंगे, गरीबों, बेसहारों, दलितों, कमजोरों, जमींदारों तथा शूदखोरों द्वारा शोषित किसानों और भ्रष्ट नौकरशाहों द्वारा उत्पीडित लोगों व जनता के जीवन में खुशियां भरने के लिए आजीवन संघर्ष करते रहे हों। इस देश में ऐसे व्यक्तियों की भी कमी नहीं रही जो ऊँची आवाज में उच्च मानवीय आदर्शों तथा जीवन मूल्यों की घोषणाएं करते हैं लेकिन उनके कार्यों में उन आदर्शों की व्यवहारिकता नहीं पाई जाती। लेकिन ठीक इसके विपरीत चौधरी छोटूराम के जीवन के इतिहास का प्रत्येक पृष्ठ, स्वाभिमान, देशभक्ति, धार्मिक एकता, भ्रष्टाचार विरोधी चेतना और आर्थिक प्रश्न के आधार पर भारत के राजनीतिक संघर्ष को दिशा देने के सन्दर्भ से भरा हुआ है। लोक–कल्याण देहाती लोगों के मसीहा, दीनबन्धु, कथन एवं कर्म की एकता की कसौटी पर उनका स्थान भारत के इतिहास में बहुत ऊँचा है। चौधरी छोटूराम बड़े बुद्धिमान प्रवीण राजनीतिज्ञ, विद्वान, कुशल, प्रशासक, दयानन्द के सच्चे शिष्य, कर्मयोगी, ईमानदार, निपुण कार्यकर्ता, चरित्रवान, समाज–सुधारक, सिद्धान्तों के धनी, दलितों एवं मजदूरों के हितकारी एवं रक्षक, निडर नेता, उदार हृदय, साहसी वीर, सच्चे देशभक्त और अंग्रेजों के विरोधी थे। जो इन्सान यह कहता है कि हम मौत पसन्द कर सकते हैं भारत विभाजन नहीं तथा मैं अंग्रेजों के खिलाफ हाथ में तलवार लेकर लडूंगा। यदि अंग्रेजों ने हमें आजाद नहीं किया इससे बढ़कर देशभक्त भला और कौन हो सकता है।

चौधरी छोटूराम ने आर्थिक उत्थान के लिए अनेक योजनाएं बनाई तथा अनेक कार्य किए। जिससे आज पंजाब और हरियाणा को उपजाऊ क्षेत्र माना जाता है। इसके लिए चौधरी साहब ने बड़ी मेहनत, लनगन व परिश्रम से निष्ठापूर्वक कार्य किए। आर्थिक उत्थान के विषय में हम चौधरी साहब के कार्यों एवं योजनाओं को पाँच भागों मतें विभाजित कर सकते हैं।

- सिंचाई के साधन उपलब्ध कराकर
- कानूनों द्वारा आर्थिक उन्नति करना
- उद्योगों द्वारा जनता का कल्याण करना

- उन्नत कृषि योजनाओं एवं कार्यक्रमों द्वारा

जिनका संक्षेप में वर्णन इस प्रकार है। सिंचाई के साधन उपलब्ध कराने के लिए चौधरी साहब यह समझते और जानते थे कि बिना सिंचाई व पानी के अभाव में कृषि में उन्नति करने की सोचना व्यर्थ है। अतः उन्होंने सिंचाई के साधनों के लिए अनेक कार्य किए।

- मण्डी जल विद्युत योजना लागु करना
- भाखड़ा बांध योजना
- हनेली कैनाल प्रोजैक्ट
- खुशाब ब्रांच को निकालना
- करौल टयूबवैल्ज स्कीम
- जमन गरबी नहर
- ताजे वाला हैड
- नहरों और रजबाहों को बढाना
- दुल्हेडा और झज्जर राजबाहा निकालना
- बुटाना नहर के दो हिस्से करना
- मेन बडी नहर में पानी बढाना

अतः इन योजनाओं से चौधरी साहब ने धनहीन व जलहीन इलाकों को समृद्ध बनाया। जहां धूल उडती थी वहां खेत लहलहा उठे। लोगों में खुशी का माहौल उत्पन्न हो गया।

1936 ई0 के चुनाव के बाद मंत्रीमण्डल बनते ही चौधरी छोटूराम ने विकास का कार्य आरम्भ किया। इसके लिए जो कानून बनाए गए उनको किसानों ने सुनहरी कानून और शहरियों और साहूकारों ने काले कानून का नाम दिया। इस कानूनों से पंजबा में गरीबी को बड़ी राहत मिली और आर्थिक उत्थान हुआ। शोषकों पर कमर तोड़ हमले किए गए। जिनका वर्णन संक्षेप में इस प्रकार है।

- भूमि हस्तान्तरण कानून
- पंजाब भूमि हस्तान्तरण कानून 1907
- पूर्व भोगाधिकार कानून 1913
- पंजाब भूमि हस्तान्तरण कानून संशोधन 1931
- रेगुलेशन ऑफ अकाउन्टस कानून 1930
- पंजाब ऋण राहत कानून 1935
- आर्थिक शोषण पर करारी चोट
- मनमाने ब्याज पर प्रतिबन्ध
- ऋण समझौता बोर्ड का प्रावधान
- पंजाब रिडैम्पशन ऑफ मोर्टगेज कानून के अधिकार के विस्तृत स्वरूप प्रदान करना
- पिछड़े वर्ग को सम्मिलित करना
- सिलैक्ट कमेटी की सिफारिशों का एक अन्य बिल प्रस्तुत करना।

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 10 , Issue : 04 | October - December 2023

- पंजाब डेटर्स प्रोटैक्शन कानून 1936
- पंजाब ऋण राहत कानून (संशोधन) 1940
- मनी लैडर्स रजिस्ट्रेशन कानून
- जमींदार व गैर जमींदार साहूकारों को समानता
- भूमि हस्तान्तरण कानून में संशोधन
- पंजाब रहन भूमि पुनः प्राप्ति कानून
- बेनाम कानून
- जमींदार साहूकार कानून
- एग्रीकल्चर प्रोड़यूस मार्केटस कानून (मण्डी कानून)
- पैदावार पर लूट को रोकना
- माप तोल कानून 1941
- पंजाब रजिस्ट्रेशन ऑफ मनी लैडर्ज एक्ट 1938
- पंजाब ट्रैड एम्पलाईज एक्ट 1940

चौधरी छोटूराम वास्तव में पंजाब के कृषकों व देहातियों के संकटों को मोचनहार थे। अतः इन्हें अनेक कण्ठ दीनबन्धु के नाम से पुकारते हैं।

चौधरी छोटूराम स्वयं यह मानते थे कि किसी भी देश की आर्थिक स्थिति केवल खेती और नौकरी से ऊँची नहीं हो सकती है। अच्छी खेती से अच्छी रोटी तो मिल सकती है लेकिन देश या आम जनता माला–माल नहीं हो सकती। इसलिए उन्होंने एक बार उद्योगपतियों की कान्फ्रैंस में कहा था कि – प्रान्त की समृद्धि और फैली हुई बेरोजगारी दोनों ही स्थितियों को सुधारने के लिए उद्योग धन्धों की उन्नति ही प्रमुख साधन है। हमारे देश का कच्चा माल जो एक रूपये में एक सेर पश्चिमी देशों को जाता है। वही पक्का या तैयार होकर हमें एक छटांक और कोई–कोई तो एक तौला ही मिलता है। अतः उद्योगों का विकास अति आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। इसलिए उद्योगों के विकास के लिए उन्होंने अनेक कार्य किए ताकि आर्थिक उत्थान को प्रोत्साहन मिल सके। संक्षेप में इनका वर्णन इस प्रकार है।

- चमड़े रंगने के धन्धें से लगाव रखना
- उद्योग धन्धों के विकास के लिए की गई मांग के कटौती प्रस्ताव को ध्वंस करना
- नीजि उद्योगों को सहायता
- उद्योगों के लिए अधिक बजट का प्रावधान
- पानीपत में ऊन साफ करने का कारखाना शुरू करना
- कताई एवं बुलाई के धन्धों को प्रोत्साहन
- कातना और बुनना सिखाने के लिए चलती–फिरती पार्टियां बनाना
- उद्योगों एवं लघु उद्योगों के लिए ऋण का प्रावधान करना
- नए–नए उद्योगों को प्रोत्साहन देना
- निरीक्षक मंडल कायम करने का प्रयास
- कुटीर एवं ग्रामीण उद्योगों से उन्नति करने की विचारधारा
- रेशम के कीड़ों का बीज तैयार करना

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 10 , Issue : 04 | October - December 2023

- रस्सा बनाने के कार्य से लगाव
- मुर्गी पालन के धन्धे को प्रोत्साहन देना
- मक्खन बनाने को प्रेरित करना
- पनीर, टोकरी, बढ़ई गिरी और मिट्टी के बर्तन बनाने का कार्य शुरू करने की योजना लागू करना
- उद्योगों को राजकोषीय सहायता
- पानीपत में रूई कातने का कार्य शुरू करवाना
- धातु की पॉलिश के काम को प्रोत्साहन देकर

चौधरी छोटूराम ने विकासमन्त्री के तौर पर एक खाका खींचा, जिसके जरिये उद्योगों को सहायता दी जा सकती है।

- ऋण उपलब्ध कराकर
- अनुदान देकर
- पूंजी की किसी सीमा तक वापसी की गारन्टी देकर
- हायर परचेज सिस्टम के मुताबिक मशीनरी उपलब्ध कराकर इत्यादि

उन्नत कृषि योजनाओं और कार्यक्रमों द्वारा भी चौधरी छोटूराम ने आर्थिक उत्थान में योगदान दिया जिनका संक्षेप में वर्णन इस प्रकार है –

- लायलपुर कृषि कॉलेज को सहायता देना
- कृषि अनुसंधान को प्रोत्साहन देना
- कपास के उन्नत किए गए बीज से आर्थिक प्रोत्साहन
- गेहूँ के बीजों में सुधार अर्थात् गेहूँ के सुधरे हुए बीज
- ईख में कोयम्बटूर बीज
- मटर के उन्नत बीज
- चावल के नए बीजों से स्वाद में बढ़ोतरी
- रेतीली जमीन का उपयोग करना
- आलू का उन्नत बीज तैयार करना
- सिगरेटों के लिए प्रयोग होने वाले तम्बाकू में बीज की खोज करना
- फलों का पैदावार में बढ़ोतरी करना
- फसल का रोगों से बचाव करना
- कृषक सहायता कोष की स्थापना

खेती अब लाभदायक पेशा बन गई थी और खाद्यान्नों का उत्पादन कई गुणा ज्यादा हो गया थ। विशेष मौकों पर किसानों को विकसित कृषि यन्त्र भी दिए जाते थे। अब उन्नत किस्म के बीज भी मिलने लगे थे। किसानों को बीज बोने तथा फसल काटने के लिए नई तकनीकी सहायता भी दी जाती थी। चौधरी छोटूराम के समय में किसानों को खेतों में नई–नई किस्म के खादों का प्रयोग करना भी सिखाया गया था। बड़े पैमाने पर सिंचाई के लिए कुएं खोदे गए थे और कुछ इलाकों में ट्यूबवैलों के लिए बिजली की आपूर्ति कर दी गई थी। नलकूप लगाने तथा नए किस्म के औजार खरीदने के लिए अनुदान भी दिए

गए थे। अतः हम कह सकते हैं कि कृषि से आर्थिक उत्थान को प्रोत्साहन देने के लिए चौधरी छोटूराम ने अथक भरसक व भरपूर कार्य किए। जिनके लिए वे श्रद्धा व आदर के पात्र है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि चौधरी छोटूराम ने अपना सारा जीवन किसानों, गरीबों, शोषित वर्गों और यूनियनिस्ट पार्टी को संगठित करने में लगा दिया। चौधरी छोटूराम ने कभी भी मन्त्री पद पाने की इच्छा न थी। पंजाब की खातिर उन्होंने भारत के स्वर्ग कहलाने वाले कश्मीर प्रान्त का प्रधानमन्त्रित्व भी ठुकरा दिया। मेरी अन्तर–आत्मा की आवाज के अनुसार यदि चौधरी छोटूराम पंजाब में अपने वंश को राजनीति में ले आते तो आज तक चौधरी साहब जी के वंश का ही राज रहता क्योंकि उन्होंने पंजाब वर्तमान हरियाणा और पंजाब के लिए इतने कल्याणकारी कार्य किए थे जिससे उनको अवतार का रूप माना गया है और उन्हें अनेक नामों जैसे दीनबन्धु, गरीबों के मसीहा, अन्नदाता, किसान हितैषी, रहबरे–आजम, छोटा राम और देहातियों के रक्षक की संज्ञा दी गई है।

Reference

1. Bhargave, Dayanand : Jaiva Ethics, Delhi 1968.
2. Bool Chand : Lord Mahavira, Banaras 1948.
3. Gopal, S. : Outlines of Jainism, New Delhi, 1973
4. Jacobi H, Studies in Jainism, Ahmedabad 1946.
5. Jain, Jyoti Prasad : Jainism : The Oldest living religion, Banaras, 1951.
6. Jain, Jyoti Prasad : Religion and Culture of the Jains, New Delhi, 1977.
7. Mehata M.L. Jaina Culture, Varanasi, 1969.
8. Winternitz M. : The Jaines in the History of Indian Literature, Ahmedabad, 1946.